रिक्शावाली लड़की

समीक्षा : ऋचा पाण्डेय

जब 12 साल के एक लड़के से यह पूछा गया, "अगर आपके पास कोई हुनर हो, लेकिन समाज आपको उसका इस्तेमाल करने से रोके तो आपको कैसा लगेगा?" उसने कहा, "मुझे दुःख होगा और ग़ुस्सा भी आएगा।" 11 साल की एक लड़की ने कहा, "मुझे महसूस होगा कि मैं बेकार हूँ, और मेरी कोई अहमियत ही नहीं है।" 10-12 साल के बच्चे भी यह समझते हैं कि जब उन्हें उनके किसी ऐसे हुनर का इस्तेमाल करने से रोका जाता है, जिसे वे बहुत अहमियत देते हैं तो उन्हें कैसा लगता है। उनके मन में दुःख और मानसिक उलझन से लेकर ख़ुद के बेकार होने का एहसास और ग़ुस्से जैसी कई तरह की भावनाएँ पैदा होती हैं।

अब सोचिए, कई ऐसे ही विद्यार्थियों से भरी कक्षा में *रिक्शावाली लड़की* की कहानी पर चर्चा हो रही है। पहले अध्याय को पढ़ते-पढ़ते, वे इस बात का अन्दाज़ा लगाने की कोशिश करते हैं कि कहानी में जिस लड़की, नईमा की बात हो रही है वह कितने साल की होगी। ज़्यादातर विद्यार्थियों को लगता है कि वह कम-से-कम 15 साल की होगी, क्योंकि वह घर के ऐसे काम करती है जो छोटे बच्चे आमतौर पर नहीं करते। कुछ विद्यार्थी सोचने लगते हैं कि जब नईमा की बहन विद्यालय जाती है तो वह क्यों नहीं जाती! कुछ विद्यार्थी इस बात को लेकर काफ़ी असहजता महसूस करते हैं कि नईमा अपने किसी मित्र से सिर्फ़ इसलिए बातचीत नहीं कर सकती, क्योंकि उसका मित्र लड़का है। कुछ विद्यार्थी तब भी असहज महसूस करते हैं जब नईमा ख़ुद को इसलिए बेबस महसूस करती है, क्योंकि एक लड़की होने के कारण वह अपने माता-पिता की आर्थिक रूप से मदद नहीं कर पाती। और लड़कियाँ काम करने के लिए बाहर नहीं जातीं। लड़कियाँ तो घर के काम करने के लिए होती हैं।

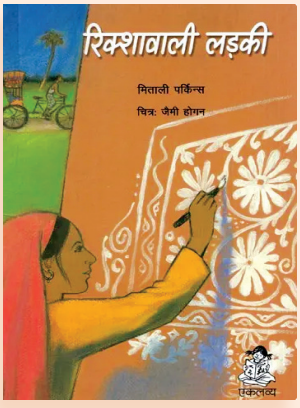

लेखिका : मिताली पर्किन्स
चित्र : जेमी होगन
आयु वर्ग : 7 से 10 वर्ष
पृष्ठ संख्या : 96
भाषा : हिन्दी, अँग्रेज़ी, बंगाली सहित 7 अन्य भाषाओं में उपलब्ध
प्रकाशक : चार्ल्सब्रिज पब्लिशिंग

मिताली पर्किन्स की लिखी और जेमी होगन के बनाए चित्रों से सुसज्जित *रिक्शावाली लड़की* नामक यह रचना 96 पन्नों का एक छोटा उपन्यास है। कहानी नईमा के इर्द-गिर्द घूमती है जो 10 साल की लड़की है, और बांग्लादेश के एक गाँव में अपने माता-पिता और छोटी बहन के साथ रहती है। नईमा को एक ख़ुशमिज़ाज और थोड़ी लापरवाह लड़की के रूप में दिखाया गया है। लेकिन जब वह 'अल्पना' (फ़र्श और दीवारों पर बनाए जाने वाले आकर्षक पैटर्न और डिज़ाइन) बनाती है तो बहुत सावधानी बरतती है। अपने गाँव की सबसे अच्छी अल्पना कलाकार होने के बावजूद नईमा को विद्यालय छोड़ना पड़ा, क्योंकि उसके माता-पिता अपनी दोनों बेटियों को विद्यालय भेजने का ख़र्च नहीं उठा सकते थे।

इस उपन्यास को 13 अध्यायों में बाँटा गया है। इनमें से हर एक नईमा की भीतरी और बाहरी दुनिया को दिखाता है। कहानी के पहले हिस्से में नईमा द्वारा अपने पिता का रिक्शा चलाने की नाकाम कोशिश के बारे में बताया गया है। इससे उसकी सोच बदल जाती है, क्योंकि उसे लगता है कि उसने अपने माता-पिता की मुश्किलें और बढ़ा दी हैं। कहानी के दूसरे हिस्से में नईमा अपने दोस्त सलीम की मदद से एक हल निकालती है। इस दौरान उसे पता चलता है कि औरतें कुछ भी कर सकती हैं—यहाँ तक कि रिक्शे की मरम्मत करने की दुकान भी चला सकती हैं। उपन्यास का अन्त नईमा की सोच में बदलाव के साथ होता है : पहले वह सोचती थी, "काश, मैं लड़का होती!" लेकिन बाद में उसे लगता है, "अच्छा हुआ कि मैं लड़की हूँ!"

यह उपन्यास बच्चों को सोचने पर मजबूर करता है, क्योंकि अकसर उनसे कहा जाता है कि वे कुछ काम इसलिए नहीं कर सकते क्योंकि समाज ऐसा कहता है। माता-पिता के लिए भी इसे पढ़ना ज़रूरी है, क्योंकि यह बच्चों के मन की दुनिया को समझने का

ज़रिया है, और दिखाता है कि माता-पिता की बातें बच्चों पर कितना असर डालती हैं। नईमा के पिता की यह बात, कि मेरी दोनों बेटियाँ बेटों के बराबर हैं, नईमा को उसके अपराध-बोध से उबरने और अपने जुनून को जारी रखने में मदद करती है।

शिक्षकगण इस उपन्यास का इस्तेमाल कई तरह से कर सकते हैं। नईमा की कहानी जेंडर से जुड़ी भूमिकाओं और रूढ़िवादी सोच के इर्द-गिर्द घूमती है। लेकिन यह कहानी उसके पक्के इरादे और हिम्मत की भी मिसाल है। परिवार की आर्थिक मदद के लिए नईमा का अपने पिता का रिक्शा चलाने की कोशिश करना, और बाद में अपनी अल्पना बनाने की विशेष कला का उपयोग करके उसे ठीक करवाने का फ़ैसला करना, उसके पक्के इरादे और हिम्मत को दिखाता है। इससे यह भी पता चलता है कि आदर्शों या रोल मॉडल का होना विद्यार्थियों की भीतरी सोच को सकारात्मक रूप से बदलने में कितनी अहम भूमिका निभाता है, और इसका फ़ायदा हर विद्यार्थी को मिलता है। जब नईमा रिक्शे की मरम्मत की दुकान चलाने वाली एक विधवा महिला से मिलती है तो उसे पता चलता है कि औरतें जो चाहें वह कर सकती हैं, भले ही समाज कुछ भी कहे।

'अनुमान लगाने' जैसी पढ़ने की रणनीतियों का इस्तेमाल बहुत असरदार हो सकता है, क्योंकि विद्यार्थी कहानी के मुख्य पात्र से ख़ुद को जोड़ पाते हैं। उदाहरण के लिए, जब नईमा अपने माता-पिता को अपनी आर्थिक मुश्किलों के बारे में बात करते हुए सुनती है तब शिक्षक कहानी रोककर विद्यार्थियों से अनुमान लगाने के लिए कह सकते हैं कि आगे क्या होगा। जब नईमा के पिता उसे रिक्शे की मरम्मत वाली दुकान पर लड़के के भेष में देखते हैं तब यह सवाल पूछा जा सकता है, "आपको क्या लगता है कि नईमा के पिता अब क्या करेंगे?"

विद्यार्थियों की तैयारी के हिसाब से कहानी को आसान बनाकर विषयवस्तु में बदलाव करने से मदद मिलती है। मुश्किल शब्दों और उनके अर्थों वाला 'शब्द भण्डार' देकर कहानी की भाषा को आसान बनाया जा सकता है। हर अध्याय के अन्त में कई तरह के सवाल पूछने से भी अच्छी चर्चा करने में मदद मिलेगी। उदाहरण के लिए, "रिक्शा कहाँ टकराता है?" जैसे तथ्यात्मक सवालों के बाद "नईमा ने रिक्शा क्यों चलाया?" जैसा सवाल पूछा जा सकता है। इससे विद्यार्थी अनुमान लगाकर जवाब देने के लिए प्रेरित होते हैं। "अपने पिता की मदद के लिए नईमा और क्या कर सकती थी?" जैसे सवाल अपनी राय देने पर आधारित होते हैं जो विद्यार्थियों की सोचने-समझने की क्षमता को बढ़ावा देते हैं।

कुल मिलाकर, यह पुस्तक अपनी प्रासंगिक कहानी और भावनात्मक पहलू के कारण पाठकों के मन और दिल को छू लेती है। यह माध्यमिक स्तर के उन विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त है जो बड़े हो रहे हैं, अपने आस-पास की दुनिया को समझ रहे हैं, और समाज की पाबन्दियों के कारण अपनी निराशा को दबाए हुए हैं।

अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।

ऋचा पाण्डे को पढ़ाने, पाठ्यक्रम तैयार करने, और स्कूल लीडरशिप का 11 साल से ज़्यादा का अनुभव है। वे समान अवसर वाली कक्षाओं का निर्माण करने, और हर विद्यार्थी के लिए सीखने का सार्थक अनुभव तैयार करने की दिशा में शिक्षकों से संवाद करने के लिए बेहद उत्साहित रहती हैं।

मल्ली चली बाज़ार

समीक्षा : महेश कुमार सी एस

जीवा रघुनाथ द्वारा लिखी गई बच्चों की सचित्र कहानी की किताब *मल्ली चली बाज़ार* (Malli Goes to the Market), *मल्ली शृंखला* की तीसरी किताब है। दो भाषाओं में उपलब्ध यह किताब रंग-बिरंगे, आकर्षक और जीवन्त चित्रों से सँवरी है। इसकी रचना तमिलनाडु के एक जीवन्त गाँव, और वहाँ के स्थानीय बाज़ार की पृष्ठभूमि में की गई है। किताब की कहानी उन लोगों को अपने देखे हुए बाज़ार की याद दिलाती है, जिन्होंने गाँव का बाज़ार देखा है, और जिन्होंने नहीं देखा है, उनके मन में बाज़ार जाकर वहाँ की रंग-बिरंगी व भीड़-भाड़ वाली दुकानों को देखने और स्थानीय व्यंजनों—गुलाबी सोडा, शहद की मिठाई (तेन मिट्टाई) और मूँगफली के लड्डू—का स्वाद चखने की इच्छा जगाती है।

यह कहानी मल्ली और उसके दोस्तों के बाज़ार जाने, अपनी पसन्द की चीज़ें ख़रीदने और आपस में बाँटकर खाने से बनी दोस्ती की भावना को बेहतरीन अन्दाज़ और दिलकश चित्रों के माध्यम से दर्शाती है। गाँव और बाज़ार का दृश्य आँखों के सामने जीवन्त हो उठता है, जहाँ चित्र और कहानी एक दूसरे की बाँहों में बाँहें डाले दिखते हैं। बाज़ार की चीज़ों की क़ीमतों की तरह, मल्ली के दोस्तों की आर्थिक और सामाजिक स्थिति में भी विविधता है। कहानी के पात्र कादर, मिनमिनी, जॉनी और तिलक अलग-अलग सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों का प्रतिनिधित्व करते दिखाई देते हैं। बाज़ार जाने से पहले वे जिन कामों में व्यस्त थे, उनका विवरण ग्रामीण बच्चों की दिनचर्या को ख़ूबसूरती से सामने लाता है।

यह विविधता आगे बढ़कर उनके स्वाद की पसन्द में भी दिखाई देती है। परिणामस्वरूप, हर कोई बाज़ार में तरह-तरह की चीज़ें खाना चाहता है। लेकिन हर किसी में अपनी पसन्द की चीज़ ख़रीदकर खाने की क्षमता नहीं है। कुछ के पास ज़्यादा पैसे हैं तो कुछ के पास कम। इस अन्तर से ऊपर उठकर दोस्त यह कैसे तय करें कि किसे क्या खाना है। इस तरह अपनी मनपसन्द चीज़ को खाना भी उनके लिए मज़े का एक हिस्सा बन जाता है। उनके बीच के अन्तरों से परे, उन्हें साथ जोड़ने वाला दोस्ती का गहरा भाव यह तय करता है कि हर किसी को वह मिले जो वह चाहता है। दोस्ती की भावना के साथ-साथ कहानी में गणितीय गणना यानी हिसाब-किताब भी शामिल है।

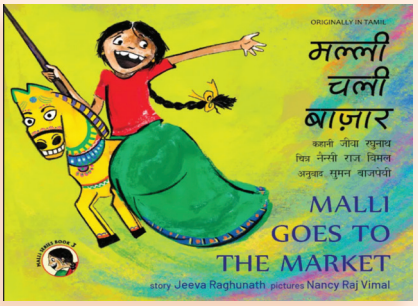

लेखक : जीवा रघुनाथ
अँग्रेज़ी से हिन्दी अनुवाद : सुमन बाजपेयी
चित्र : नैन्सी राज विमल
आयु वर्ग : 3 वर्ष से अधिक
पृष्ठ संख्या : 20
भाषा : अँग्रेज़ी-कन्नड़ / अँग्रेज़ी-हिन्दी
प्रकाशक : तूलिका बुक्स

कहानी के विवरण व घटनाक्रम को ध्यान में रखते हुए शिक्षक विद्यार्थियों को कहानी सुनाते या पढ़ाते समय उनका ध्यान कई ऐसे बिन्दुओं की ओर आकर्षित कर सकते हैं जिनसे विद्यार्थियों के अनुभव और कल्पना संसार को समृद्ध किया जा सके।

यह किताब मुख्य रूप से बाज़ार और उस गाँव के वातावरण पर आधारित है जहाँ बाज़ार लगता है। कहानी की शुरुआत में "मल्ली के गाँव में बाज़ार का दिन था" पंक्ति पढ़ते हुए एक विद्यार्थी ने बताया कि उसके गाँव में सोमवार को लगने वाला बाज़ार सोमवार का बाज़ार कहलाता है। फिर कई अन्य विद्यार्थियों ने अपने-अपने गाँव में लगने वाले बाज़ार के दिन, उनके नाम और वहाँ मिलने वाली चीज़ों के बारे में विस्तार से बताया। विद्यार्थी समझ पाए कि गाँव के घूमते-फिरते पारम्परिक बाज़ार सप्ताह में एक ही दिन लगते हैं। वे बड़े क़स्बों और शहर के बाज़ार से इनके फ़र्क़ को भी समझ पाए।

इस कहानी के बाज़ार में अलग-अलग तरह की कई खाने-पीने की चीज़ों के नाम हैं। विद्यार्थियों से इन चीज़ों के स्वाद, बनाने के तरीक़ों, उनकी पसन्द और रुचियों, आदि के बारे में चर्चा की जा सकती है, चित्र बनवाए जा सकते हैं। इससे वे खाने-पीने की चीज़ों में विविधता को अन्य विविधताओं के सन्दर्भ से जोड़कर देख-समझ पाएँगे।

आवरण चित्र में, तेज़ी से भागते झूले के घोड़े पर सवार मल्ली की शारीरिक अभिव्यक्ति और चेहरे के भाव, उसके बाज़ार घूमने की बाल सुलभ ख़ुशी की तीव्रता और अचरज को बख़ूबी दर्शाया गया है। बरगद के पेड़ के नीचे बाज़ार जाने के लिए जुटे बच्चे, गाँव और बाज़ार के विहंगम दृश्य, पेड़ की शाखाओं पर मौज-मस्ती करते बच्चों के बारीक़ रेखाओं से उकेरे गए रंग-बिरंगे विस्तृत चित्र बहुत कुछ कहते हैं। ये विद्यार्थियों के साथ संवाद की सम्भावनाएँ बनाते हैं।

इस कहानी की एक ख़ासियत पर विशेष ध्यान देने की ज़रूरत है।

हिन्दी बाल साहित्य और पाठ्यपुस्तकों में माता-पिता की उँगली पकड़कर उनकी देखरेख में बाज़ार या मेला घूमने जाते बच्चों की तयशुदा छवियाँ आमतौर पर देखने को मिलती हैं। इस कहानी में लेखक ने भाषा और संवाद के ज़रिए बेहद सूक्ष्मता से आज़ाद बच्चों की छवियों को जिस तरह से गढ़ा है, उन परतों को महसूस करना ज़रूरी है।

कन्नड़ से हिन्दी में किरन मंजुनाथ द्वारा अनुवादित।

महेश कुमार सी एस, अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी, बेंगलूरु की कम्युनिकेशन और पब्लिकेशन टीम में कन्नड़ इनिशिएटिव समूह के साथ कार्यरत हैं।